


---

Prasaratu Loke Sanskrita Bhasha

——  
प्रसरतु लोके संस्कृतभाषा

——  
Document Information



---

Text title : Prasaratu Loke Sanskrita Bhasha

File name : prasaratulokesaMskRRitabhASHA.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Transliterated by : Shri Abirami Jayaraman

Proofread by : Shri Abirami Jayaraman

Latest update : September 4, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.


---

September 4, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



——  
प्रसरतु लोके संस्कृतभाषा



मनोभिलाषः -

प्रसरतु लोके संस्कृत-भाषा ।

देवतुल्या यस्या वै दासाः ॥ ध्रुवपद ॥

संस्कृति-सम्पोषकाः सुशीलाः, संस्कृतज्ञा दीनाः ।

शिवाश्रये तिष्ठन्ति स्वदेशे, यथा निर्जले मीनाः ॥

सम्बलं सत्यं केवलमाशा । प्रसरतु लोके संस्कृत-भाषा ॥ १ ॥

यस्या भाग्यशालिनो भक्ताः परमदुःखिनो जाताः ।

कुत्र जवाहरो लालस्तेषां सन्ति सुरा अवदाताः ॥

देवगीर्येषां स्वयं प्रकाशा । प्रसरतु लोके संस्कृत-भाषा ॥ २ ॥

यावत्प्रसरति नैव प्रतिगृहं पूता संस्कृतवाणी ।

नैव मिलिष्यति शान्तिरतो विज्ञेया जनकल्याणी ॥

दुःखदाऽस्ति पिशाचिनी पिपासा । प्रसरतु लोके संस्कृत-भाषा ॥ ३ ॥

अमरभारतीजुषां समाजे भूयादतिसम्मानम् ।


विभो ! विस्मृतं किं देवानां त्वया साम्प्रतं ध्यानम् ॥

एतादृशी क मृदुला भाषा ? भोजकालीना कुतो विभा सा ? ॥ ४ ॥

(श्री रामस्वरूपशास्त्री “अमरः” तालवेहटस्थः विरचितः)

Encoded and proofread by Shri Abirami Jayaraman

---

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

